रवियोग —

सूर्यभाद्वेद-गो-तर्क-दिग्विश्व-नख-सम्मिते।
चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसङ्घविनाशकाः॥

सूर्य जिस नक्षत्र में रहे उस नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ४, ६, ९, १०, १३ और २० संख्या हो तो रवियोग होता है, जो सब कुयोगों का नाश करता है।

सर्वार्थसिद्धियोग —

सूर्येऽर्कमूलोत्तरपुष्यदास्त्रं चन्द्रे श्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम्।
भौमेऽश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पं ज्ञे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचान्द्रम्॥
जीवेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधिष्ण्यं शुक्रेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितिश्रवोऽम्।
शनौ श्रुतिब्राह्मसमीरभानि सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि पूर्वैः॥

रविवार में - हस्त, मूल, उ० फा०, उ० षा०, उ० भा०, पुष्य, अश्विनी।
सोमवार में - श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा।
मङ्गलवार में - अश्विनी, उ० भा०, कृत्तिका, आश्लेषा।
बुधवार में - रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, मृगशिरा।
गुरुवार में - रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य।
शुक्रवार में - रेवती, अनुराधा, अश्विनी, श्रवण, पुनर्वसु।
शनिवार में - श्रवण, रोहिणी, स्वाती।

इस प्रकार वार और नक्षत्रों के योग से सर्वार्थसिद्धियोग बनता है, जो शुभ कहा गया है।

P.T.O

अदृष्टफलोपयोगी-भावलग्नसाधन प्रकार —

स्वभावतः प्राणियों के मन में सामान्यतया — शरीर, धन, पराक्रम, सुख, सन्तान, आरोग्य, स्त्री, आयु, धर्म, कर्म, आय और व्यय इन भावों का उदय हुआ करता है, उसके शुभाशुभत्व मुख्यतया जिस काल के द्वारा होता है उसको भावलग्न कहते हैं। सूर्योदय के अनन्तर ६० घटी में १ भचक्र भ्रमण होने के कारण-१२ राशियों के उदय हो जाते हैं, अतः एक नाक्षत्र अहोरात्र में ६० घटी होने के कारण ५, ५ घटी मान (अर्थात् २, २ घंटे) में एक-एक भावराशि का उदय हुआ करता है।

भावलग्नसाधन प्रकार —

इष्टकाल को ६ से गुणा करके अंशादि गुणनफल को औदयिक सूर्य में जोड़ने से स्पष्ट (प्रथम) भावलग्न होता है।

विशेष - औदयिक सूर्य बनाना हो तो - तात्कालिक सूर्यगति को इष्ट घटी पल से गुणाकर ६० के भाग दें, लब्धि को तात्कालिक सूर्य की कला विकला में घटाने से उदयकालिक सूर्य हो जायगा। अथवा अल्पान्तर होने के कारण इष्ट घटी पल तुल्य कला विकला तात्कालिक सूर्य में घटाने से भी उदयकालिक सूर्य बन जाता है।

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा०उ० सं० महावि० सुख सेना,
पूर्णियाँ।

उपशास्त्री

शुभाशुभ - प्रकरण

योग विचार —

आनन्दाख्यः कालदण्डश्च धूम्रो धाता सौम्यो ध्वांक्षकेतू क्रमेण।
श्रीवत्साख्यो वज्रकं मुद्गरश्च छत्रं मित्रं मानसं पद्मलुम्बौ ॥
उत्पात - मृत्यू किल काण - सिद्धी शुभोऽमृताख्यो मुसलं गदश्च।
मातङ्ग - रक्षश्चर - सुस्थिराख्य - प्रवर्धमानाः फलदाः स्वनाम्ना ॥

योग जानने के प्रकार —

दास्राद्र्के मृगादिन्दौ सार्पाद्भौमे कराद् बुधे।
मैत्राद्गुरौ भृगौ वैश्वाद्गण्या मन्दे च वारुणात् ॥

रविवार में अश्विनी से, सोमवार में मृगशिरा से, मङ्गल को अश्लेषा से, बुध को हस्त से, बृहस्पति को अनुराधा से, शुक्र में उत्तराषाढ़ा से तथा शनिवार में शतभिषा से अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों को गिनकर क्रम से आनन्दादियोग समझना चाहिये।

अशुभयोग परिहार —

ध्वांक्षे वज्रे मुद्गरे चेषुनाड्यो वर्ज्या वेदाः पद्मलुम्बे गदेऽश्वाः।
धूम्रे काणे मौसले भूर्द्वयं द्वे रक्षोमृत्यूत्पातकालाश्च सर्वे ॥

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर में प्रथम ५, पद्म और लुम्ब में ४, गद में 6, धूम्र में 1, काण और मुसल में 2, और रक्ष, मृत्यु, उत्पात एवं कालदण्ड में सम्पूर्ण घटिकाओं का शुभकार्य में निषेध करना श्रेयस्कर है।

P.T.O

द्वादशभाव बनाने का प्रकार —

लग्नं सषड्भमस्तं स्यात् तथा लग्नोनतुर्यतः।
षष्ठांशयुक्तनुः सन्धिस्ते षष्ठांशयोजनात् ॥
त्रयः ससन्धयो भावा ज्ञेया बुद्धिमता ततः।
त्रिद्विभावौ क्रमाद्युक्तौ द्वाभ्यां वेदैः सुतद्विषौ ॥
षड्भावा इति लग्नाद्याः सषड्भाः सप्तमादयः।
त्रिद्व्येकसन्धयस्त्वेकत्रिपञ्चमयुताः क्रमात् ॥
सन्धयः स्युश्चतुर्थाद्याः सषड्भाः षड्भो परे।
ग्रह सन्धिद्वयान्तःस्थो ज्ञेयस्तद्भावगः सदा ॥

लग्न में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव होता है। चतुर्थ भाव में लग्न घटा कर शेष को ६ से भाग देने पर प्राप्त (षष्ठांश) फल को लग्न में जोड़ने से लग्न की सन्धि होती है, इस (लग्न सन्धि) में वही षष्ठांश जोड़ने से द्वितीयभाव होता है। इस प्रकार बार-बार क्रिया करने से (भाव में षष्ठांश जोड़ने से सन्धि और सन्धि में षष्ठांश का योग करने से भाव) चतुर्थभाव पर्यन्त स्पष्ट होते हैं। तथा तृतीयभाव की सन्धि में १ राशि जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि और तृतीयभाव में २ राशि जोड़ने से पञ्चमभाव होता है। और द्वितीय भाव की सन्धि में ३ राशि जोड़ने से पञ्चम भाव की सन्धि एवं द्वितीय भाव में ४ राशि जोड़ देने से षष्ठ भाव बन जाता है। लग्न सहित ससन्धि ६ भावों में (प्रत्येक में) ६, ६ राशि जोड़ने से सप्तम आदि ससन्धि द्वादश भाव स्पष्ट होते हैं। जिन दो सन्धियों के बीच ग्रह हों, उन दोनों सन्धि के मध्यभाव में उस ग्रह को समझना चाहिये।

P.T.O